अनुक्रमणिका

घोषणा पत्र

प्रमाण पत्र

आभार

शोध-सारांश

प्रस्तावना 07-11

साहित्य पुनरावलोकन

शोध समस्या

शोध की प्रासंगिकता

शोध प्रश्न

शोध उद्देश्य

शोध प्रविधि

प्रथम अध्याय सार्क संगठन एवं परिचय ***12-40***

i. सार्क के उद्देश्य
ii. सार्क चार्टर
iii. दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार क्षेत्र (साफ्टा)
iv. सार्क की गतिविधियाँ
v. सार्क बार्षिक शिखर सम्मेलन

द्वितीय अध्याय सार्क देशों के साथ भारत का संबंध ***41-78***

तृतीय अध्याय सार्क की समस्या एवं समाधान ***79-98***

चतुर्थ अध्याय सार्क में भारत की भूमिका ***99-122***

i. भारत द्वारा सार्क को सफल बनाने में आर्थिक सहयोग की भूमिका
ii. सार्क देशों में भारत का निवेश
iii. भारत द्वारा सार्क देशों को प्रदान सैन्य सुविधाएँ

निष्कर्ष ***123-124***

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची ***125-128***

परिशिष्ट ***129-133***

ज्ञान शांति मैत्री

सारांश

दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) ने अपने तीन दशक के सफर में दक्षिण एशियाई लोगों के कल्याण करने, जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास करने में आंशिक रूप से ही सफल हो पाया है। यह अपने 31 वर्षों के सफर में साफ्टा, सार्क वित्तीय फंड, गरीबी उन्मूलन कोष, सार्क खाद्य बैंक एवं सार्क विश्वविद्यालय की स्थापना करने में सफल रहा है। इन सबके बाबजूद सार्क देशों में कुल 5 प्रतिशत ही आपस में व्यापार करते हैं। गरीबी, भूखमरी, बेरोजगारी एवं आतंकवाद की समस्या बनी हुई है। सार्क के दो देश भारत एवं पाकिस्तान के आपसी तनाव के कारण सार्क की सफलता में बाधा उत्पन्न हो रही है। सार्क में भारत की भूमिका आर्थिक, वाणिज्यिक एवं कूटनीतिक रूप से अहम है। क्योंकि भारत न केवल क्षेत्रफल व जनसंख्या के लिहाज से 70 प्रतिशत हिस्सेदारी रखता है, बल्कि संगठन की अर्थव्यवस्था में भी 70 प्रतिशत हिस्सेदारी रखता है। भारत का सार्क देशों के साथ व्यापार 15 बिलियन डॉलर का है। जिसमें सबसे ज्यादा व्यापार बांग्लादेश, श्रीलंका व नेपाल के साथ है। नेपाल और भूटान का 50 प्रतिशत से अधिक व्यापार भारत के साथ होता है। भारत सार्क के लगभग सभी देशों की आर्थिक एवं तकनीकी मदद कर रहा है। सार्क के सभी देश किसी-न-किसी तरह से भारत के ही भू-भाग रहे हैं इसीलिए भारत सांस्कृतिक तौर पर इनके लिए केंद्र के समान है। वर्तमान में दक्षिण एशिया में चीन के बढ़ते हस्तक्षेप एवं प्रभाव के कारण भारत के समक्ष एक चुनौती उभर रही है।

ज्ञान शांति मैत्री

Summary

South Asian Regional Cooperation Organization (SAARC) has partially succeeded in improving the welfare of the South Asian people and improving quality of life and social, economic and cultural development in its 32 years journey. It has been successful in establishing SAFTA, SAARC Financial Fund, Poverty Alleviation Fund, SAARC Food Bank and SAARC University on its thirty two year's journey. Regardless of these, only 5% of SAARC countries trade in their mutual trade. The problem of poverty, hunger, unemployment and terrorism remains in the region. The two countries of SAARC, India and Pakistan, have created difficulties in the success of SAARC by mutual tension of these two countries. India's role in SAARC is important in Economic, Commerce and Diplomacy. Because India not only holds 70% in terms of area and population, but it has a 70% stake in the organization's economy. India's trade with SAARC countries is $ 15 billion. The biggest trade is with Bangladesh, Sri Lanka and Nepal. More than 50% of Nepal and Bhutan are in business with India. India is imposing and helping economically and technological imports to almost all the countries of SAARC. All the countries of SAARC are part of India in some way, so India is culturally similar as the Center for them. Presently there is a challenge in front of India due to China's growing interference and influence in South Asia.

ज्ञान शांति मैत्री

प्रस्तावना

दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क- SAARC) यह आठ देशों का आर्थिक एवं राजनीतिक संगठन है। इसकी स्थापना 8 दिसम्बर 1985 को भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल, मालदीव, और भूटान द्वारा मिल कर की गयी। 2007 में संघ के 14 शिखर सम्मेलन में अफगानिस्तान को भी इस में सम्मिलित किया गया। इस क्षेत्र के लोगो को सामूहिक कल्याण के लिए एक संगठन स्थापित करने का विचार सबसे पहले बांग्लादेश के पूर्व राष्ट्रपति जियाउर रहमान ने उस समय प्रस्तुत किया जब वे 1977- 80 की अवधि में पड़ोसी देशों की राजकीय यात्रा कर रहे थे। नवम्बर 1980 में बांग्लादेश ने दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग विषय पर एक दस्तावेज़ तैयार किया और उसे दक्षिण एशिया में उसे वितरित किया, 1981 और 1988 के मध्य सामूहिक लक्ष्यो की प्राप्ति हेतु परिचालक एवं संस्थागत संपर्क गठित करने के लिए विदेश सचिव स्तर पर कई बहुपक्षीय बैठक हुयी। 1983 में नई दिल्ली में एक मंत्रीयस्तरीय सम्मेलन हुआ इस सम्मेलन के फलस्वरूप दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन का गठन हुआ। और एकीकृत कार्य योजना की शुरुवात हुयी, एकीकृत कार्य योजना के अंतर्गत सदस्य देशों के बीच निम्नलिखित क्षेत्रो में सहयोग स्थापित करने में सहमति हुई। कृषि, संचार, क्षिक्षा, संस्कृति, एवं खेल, पर्यावरण, एवं मौसम विज्ञान।

साहित्यिक पुनरावलोकन :

किसी भी शोध कार्य का एक महत्वपूर्ण चरण साहित्यिक पुनरावलोकन होता है। यह चरण शोध कार्य को दिशा प्रदान करता है। इसमें संबन्धित साहित्य कार्यो आदि का अवलोकन किया जाता है। इनमें से निम्न उल्लेखनीय है:-

- ***फड़िया, बी.एल. (2012). अंतर्राष्ट्रीय संबंध. साहित्य भवन, आगरा.***
- शोध कार्य के लिए पुस्तक 'अंतर्राष्ट्रीय संबंध' पुस्तक में भारत और अन्य सार्क देशों के संबंध के बारे में जानने और में यह पुस्तक बहुत ही महत्वपूर्ण रही। भारत और अन्य सार्क देशों के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक संबंधो के बारे में समझने में यह पुस्तक बहुत ही उपयोगी रही।
- ***बाजपेयी, अरुणोदय, (2012). 'समकालीन विश्व और भारत प्रमुख मुद्दे और चुनौतियाँ'. डार्लिंग किंडरस्ले प्रा.लि नई दिल्ली.***
- इस पुस्तक में हमने भारत और अन्य सार्क देशों के बीच जो वर्तमान समय में, इन देशों के बीच जो चुनौतियाँ है उन्हे समझने में इस पुस्तक की महत्वपूर्ण भूमिका रही। साथ-ही-साथ इन समस्याओ से कैसे इन सार्क देशों से बाहर निकाला जाए इस को भी जानने में इस पुस्तक की बहुत ही बड़ी भूमिका रही।
- ***पंत, पुष्पेश, (2015). '21वीं शताब्दी में अंतर्राष्ट्रीय संबंध'. McGraw Hill Education (India) Private Limited New Delhi.***

- इस पुस्तक के माध्यम से दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन में भारत की क्या भूमिका रही है। भारत और अन्य सार्क देशों के साथ किस तरीके से अपने व्यापार को अन्य सार्क देशों के साथ कर रहा है इसके बारे में भी जानकारी इस पुस्तक के माध्यम से प्राप्त हुई।
- ***बाली सूर्यकांत, (2012) भारत की राजनीति के महाप्रश्न. वाणी प्रकाशन. नई दिल्ली.***
- इस पुस्तक के माध्यम से दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन के महत्वपूर्ण घोषणाओ के बारे में जानना बहुत ही महत्वपूर्ण रही। इस पुस्तक के माध्यम से जो भी सार्क देशों के बीच घोषणा हुए है क्या वह सभी घोषणा पर कार्य किया गया है की नहीं इस की भी जानकारी इस पुस्तक के द्वारा प्राप्त हुआ।
- ***दीक्षित, जे. एन (2012). 'भारतीय विदेश नीति' (Indian Foreign Policy). प्रभात प्रकाशन. नई दिल्ली.***
- पुस्तक 'भारतीय विदेश नीति' (Indian Foreign Policy) में लेखक ने भारत की विदेश नीति के विषय में बहुत ही उत्तम ढंग से लिखा है। पुस्तक में लेखक ने भारत की विदेश नीति के साथ-साथ सार्क देशों के विदेश नीति के बारे में बहुत ही अच्छे तरीके से बताया गया है। इस पुस्तक के माध्यम से शोध प्रबंध को एक दिशा देने में सहायता मिली और भारत तथा अन्य सार्क देशों की विदेश नीति को समझने में सहायता मिली।
- ***खन्ना, वी.एन. (2003). 'अंतर्राष्ट्रीय संबंध' विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. नोएडा.***
- शोध कार्य को दिशा देने में पुस्तक 'अंतर्राष्ट्रीय संबंध' के अध्ययन से भारत तथा अन्य सार्क देशों के विभिन्न गतिविधियो के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी इस पुस्तक के माध्यम से प्राप्त हुई।
- ***बिस्वाल, तपन.(2013). 'अंतर्राष्ट्रीय संबंध' Macmillan Publishers India Ltd. Haryana***
- शोध कार्य के लिए यह पुस्तक 'अंतर्राष्ट्रीय संबंध' में भारत और उसके अन्य पड़ोसी देशों के संबंध को समझने में तथा सहायता मिली। साथ ही भारत और उसके अन्य पड़ोसी देशों के बीच जो विवाद हुये हैं उनको किस तरीके दूर कर दिया जाए ताकी ये पड़ोसी देश फिर से आपस में एक-दूसरे से दोस्ती का हाथ बढ़ा सकें। अत: इन देशों के संबंध को समझने में यह पुस्तक बहुत ही उपयोगी रही।
- ***कुमार, राय.विजय. (2007). 'अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय संस्थाए और प्रमुख व्यक्तित्व' विवास पनोरमा प्रकाशन. दिल्ली.***
- इस पुस्तक में दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन के सभी पहलुओ के बारे में बताया गया है। इसमें सार्क देशों के आपसी विश्वास, सूझ-बुझ तथा एक-दूसरे की समस्याओ का मूल्यांकन किया गया है। इस पुस्तक के माध्यम से सार्क को कैसे सार्थक बनाया जाए ताकि यह भी अन्य

संघो की तरह सफल हो सके। इस के बारे में इस पुस्तक के द्वारा हमें महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई।

- ***सिकरी, राजीव. (2009). चुनौती और रणनीति भारत की विदेश नीति पर पुनर्विचार' (Challenge and strategy rethinking India's foreign policy) Sage Publications India Pvt. Ltd.***
- इस पुस्तक में लेखक ने दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन में भारत की भूमिका के बारे में अध्ययन किया है। चाहे वह आर्थिक हो, राजनीतिक हो या सामाजिक इन सभी क्षेत्रो में भारत की भूमिका के बारे में बताया गया है। साथ ही साथ इन की चुनौतिओ तथा समाधान के बारे में भी इस पुस्तक में उल्लेख किया गया है। शोध कार्य में इस पुस्तक के माध्यम से बहुत ही सहायता मिली।
- ***पंत, पुष्पेश, (2008). 'अंतर्राष्ट्रीय संगठन' McGraw Hill Education (India) Private Limited. New Delhi***
- इस पुस्तक के माध्यम से सार्क देशों के बीच विभिन्न पहलुओ को बातचीत के जरिये सुलझा लेने की बात की गयी है। भारत की क्षेत्रीय स्तर पर गतिविधियो का आकलन करने से भी पता चलता है कि भारत इस दिशा में क्षेत्रीय शांति एवं सुरक्षा स्थापित करने, आर्थिक सहयोग हेतु नई पहल करने, तथा राजनीतिक विवादो को ईमानदारी से सुलझाने के लिए प्रयासरत रहा है। इन्ही नीतियों के परिणामस्वरूप भारत ने इस क्षेत्र के राष्ट्रो के मध्य क्षेत्रीय सहयोग की कड़ी को बढ़ाने का प्रयास किया है।
- ***मिश्र, के. एस. पुरी, वी. के. (2010). 'भारतीय अर्थव्यवस्था' हिमालया पब्लिशिंग हाउस. मुंबई***
- लेखक ने दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) के सभी देशों में जो अल्पविकास, गरीबी, भुखमरी, औद्योगिककरण की जो समस्याए इन देशों में है उस को कैसे दूर किया जाए ताकि ये देश अपने विकास के मार्ग पर फिर से आगे की ओर बढ़े सके। इसको मुख्य रूप से समझने में इस पुस्तक के माध्यम से सहायता मिली।
- ***छिब्बर, भारती, 'भारत की विदेश नीति' वर्ल्ड फोकस मासिक जर्नल***
- इस पत्रिका के माध्यम से सार्क के बीच हाल ही में हुए शिखर सम्मेलनों के बारे में जानने में बहुत ही महत्वपूर्ण रही। दक्षिण एशिया की जबर्दस्त आर्थिक क्षमता है, क्षेत्र में विश्व की 23 फीसदी आबादी निवास करती है, लेकिन वैश्विक सकल घरेलू उत्पादन में इसकी क्रय क्षमता 6 फीसदी है। इसी तरह वस्तु व्यापार में केवल 2 फीसदी हिस्सेदारी है। दुर्भाग्य यह है कि इसका पूरे सार्क देशों के साथ व्यापार देखा जाए तो वह इसके चीन के साथ व्यापार का एक तिहाई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जानते हैं कि एक सार्थक सहयोग तभी संभव है जब सार्क देशों के बीच परस्पर विश्वास और इच्छा शक्ति हो।

- ***भारत और सार्क की संभावनाए जनसत्ता समाचार***
- सार्क की स्थापना 1985 में हुई थी, 1985 से 2015 तक 18 शिखर सम्मेलन हो चुके है। इस लम्बी अवधि बीत जाने के बाद भी अत: सार्क व्यापार और निवेश यूरोपीय संघ और आशियान की तुलना में बहुत कम है। इसी आधार पर कुछ लोग कहते हैं कि सार्क की प्रगति बहुत धीमी है और भविष्य की सम्भावनाओं के बारे में घोषणा न तो व्ययोचित है और न ही तार्किक है, सार्क के अन्य आयामो पर विचारोपरान्त हमें सार्क की संभावनाए के बारे में भविष्यवाणी करनी चाहिए।

शोध समस्या:

बदलते वैश्विक एवं आर्थिक तथा राजनीतिक परिवेश में जहा एक तरफ अमेरिका एवं अन्य यूरोपीय देश निम्न आर्थिक विकास एवं राजनीतिक अस्थिरता से जूझ रहा है तथा विश्व की अनेक देशों की अर्थव्यवस्थाए पुनः संरक्षणवादी हो रही है तो इस बदलते परिवेश में भारत की सार्क और दक्षिण एशियाई देशों के बीच किस तरह से आर्थिक एवं राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति एवं इन सार्क देशों के साथ मिलकर किस प्रकार से क्रियान्वयन किया जाए कि भारत के विकास के साथ–साथ इन दक्षिण एशियाई (SAARC) देशों के भी प्रमुख चुनौतियों का उन्मूलन किया जा सके इसी समस्या के बारे में अध्ययन करना शोध का उद्देश्य।

शोध की प्रासंगिकता

सार्क अपने स्थापना के तीन दशक पूरा कर चुका है इसकी स्थापना सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक सहयोग के द्वारा क्षेत्र में शांति स्थिरता और विकास को बढ़ावा देने के लिए किया गया। यह अपने इन उद्देश्यों को प्राप्त करने में कुछ सफलता और कुछ असफलता भी मिली। परंतु इसी तरह स्थापित आशियान, यूरोपीय यूनियन आदि संगठन सार्क से कही ज्यादा अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल हुये है, ये कौन से ऐसे कारण है जिनके कारण सार्क अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में पूरी तरह सफल नही हो पा रहा है, इन्ही कारणो का पता लगाना तथा भारत की इसमें क्या भूमिका है, भारत इस को सफल बनाने में किस तरह से सहयोगी देशों के साथ मिलकर काम करे कि अन्य संघो की तरह सार्क भी एक क्षेत्रीय माडल के रूप में उभरकर सामने आए। क्योकि आज जिस तरह से वैश्विक आर्थिक एवं राजनीतिक, परिदृश्य बदल रहे है इसको देखते हुये इसकी सफलता बनाने में ही दक्षिण एशियाई देशों का हित है।

शोध प्रश्न:

1-सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक, सहयोग के द्वारा क्षेत्र में शांति, स्थिरता और विकास को बढ़ावा देने में सार्क में भारत की क्या भूमिका है?

2-साफ्टा लागू होने के बाद भी यह यूरोपीय संघ एवं आशियान के तरह सफल क्यों नहीं हो पाया?

3-अंतर्राष्ट्रीय मंचो पर समान हितो के मामलो में सदस्य देशों के मध्य सहयोग की भावना को मजबूती प्रदान करने में भारत की सार्क में क्या भूमिका है?

शोध के उद्देश्य:

1-सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक सहयोग के द्वारा क्षेत्र में शांति, स्थिरता और विकास को बढ़ावा देने में भारत की भूमिका का अध्ययन करना।

2-साफ्टा लागू होने के बाद भी यह यूरोपीय संघ एवं आशियान के तरह सफल बनाने में भारत की भूमिका का अध्ययन करना।

3-अंतरराष्ट्रीय मंचो पर समान हितो के मामलो में सदस्य देशों के मध्य सहयोग की भावना को मजबूती प्रदान करने में भारत की भूमिका का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि:

इस शोध कार्य हेतु शोधकर्ता द्वारा अपने शोध विषय से संबंधित तथ्यों एवं सूचनाओं को संकलित एवं शोध में गुणात्मक तथा संख्यात्मक तथ्यों के लिए निम्नलिखित प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

द्वितीयक श्रोत: द्वितीयक श्रोत के अंतर्गत संबंधित विषय से पूर्व में किए गए अध्ययन, पत्र, पत्रिकाएँ, भारत एवं सार्क विषय से संबंधित आकड़े, (इंटरनेट) वार्षिक प्रतिवेदन, समाचार, टेलीविज़न, भारत और सार्क द्वारा बनाए गए विभिन्न संगठनो के वार्षिक प्रतिवेदन इत्यादि का विषय-वस्तु विश्लेषण किया गया है।

निष्कर्ष:

दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन के नाम से ही स्पष्ट है कि प्रमुख उद्देश्य सभी दक्षिण एशियाई राष्ट्रो में एकजुटता लाकर आपसी विश्वास बढ़ाना है ताकि सार्क के उद्देश्य जिसमे मुख्यत: दक्षिण एशियाई लोगों के लिए कल्याण को बढ़ावा देना और उनके जीवन गुणवत्ता में सुधार लाना, क्षेत्र में आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, विरासत में तेजी लाना और सभी व्यक्तियों के स्वाभिमान के साथ रहने और पूरी क्षमता का एहसास का अवसर प्रदान करना और साझा हितों के मामलों पर अंतरराष्ट्रीय मंचों पर एक साथ मजबूती से खड़ा होना रहा है। अपनी स्थापना के तीन दशक बाद भी सार्क ने निम्न उपलब्धियाँ हासिल की है। आर्थिक क्षेत्र में सार्क ने मुफ्त व्यापार के रूप में विकसित करने के लिए 2006 में साफ्टा व्यापार लागू किया। इसके अलावा सार्क ने सार्क वित्त फंड की भी स्थापना की, गरीबी उन्मूलन कोष स्थापित किया, सामाजिक क्षेत्र में लोगों को सशक्तिकरण के लिए लगभग हर सम्मेलन में कार्य योजनाएँ बनायी गयी। इस क्षेत्र में शिक्षा के प्रसार के लिए दिल्ली में सार्क विश्वविद्यालय खोला गया, महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए महिला को सार्क का सचिव बनाया गया, सांस्कृतिक क्षेत्र में तो सार्क ने क्षेत्रीय सहयोग के लिए नई इबारत ही लिख दी। सार्क गेम्स, युवा सम्मेलन, युवा महोत्सव, सार्क आयोजन आदि आयोजनों के माध्यम से इस क्षेत्र की जनता के बीच सम्पर्क बढ़ाने की कोशिश की जा रही है। खाद्यान सुरक्षा के क्षेत्र में सार्क देशों ने सार्क फूड बैंक की स्थापना की है। इसके लिए खाद्य प्रसंकरण के क्षेत्रों में तमाम कार्य किए जा रहे हैं तकनीकी क्षेत्र में सभी देश पिछड़े हुए हैं इसीलिए तकनीकी सहयोग हेतु सार्क के सभी सम्मेलनों में मंथन होता रहा है। इस क्षेत्र में सहयोग को प्रेरित करने के लिए भारत ने मई 2017 'दक्षिण एशिया सैटेलाइट' का अनमोल तोहफा दक्षिण एशियाई के देशों को दिया है। ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग की तमाम संभावनाएँ हैं इसलिए सार्क ने इस क्षेत्र को ऊर्जा समुदाय के रूप में विकसित करने की कार्ययोजना पर कार्य कर रहा है। पर्यावरणीय क्षेत्र में क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देने के लिए 16वें शिखर सम्मेलन में 'क्लाइमेट इनोवेशन' (Climate Innovation) केन्द्रों की स्थापना पर बल दिया गया। आतंकवाद के निराकरण के लिए क्षेत्रीय सहयोग बढ़ाने हेतु 1987 के काठमाण्डू सम्मेलन से ही कोशिशें जारी हैं लगभग हर सम्मेलन में आतंकवाद को मुख्य मुद्दे के रूप में शामिल किया गया और उन्मूलन के लिए यूएनओ (UNO) की तर्ज़ पर सार्क सम्मेलन बुलाने की योजना बनाई गयी।

उपरोक्त उपलब्धियों के बाबजूद अभी भी सार्क विभिन्न चुनौतियों का सामना कर रहा है जैसे- साफ्टा के स्थापना के बाद भी कुल दक्षिण एशियाई व्यापार को केवल 5% व्यापार होता है। सार्क फूड के होते हुए भी अभी क्षेत्र की 40% जनसंख्या भूखमरी की शिकार है। इसके अलावा अशिक्षा, गरीबी, बेरोजगारी एवं आंतरिक तनाव जैसी समस्याएँ बनी हुई हैं। आतंकवाद के उन्मूलन के लिए एक तरफ सार्क कन्वेन्शन बुलाने की बात हो रही है दूसरी तरफ कुछ देश एक दूसरे के विरूद्ध आतंक प्रायोजित भी कर रहे हैं। अपने 32 साल के सफर में सार्क नें कम असफलता अर्जित की है तो इसके प्रमुख कारणों में से एक कारण भारत पाकिस्तान तनाव रहा है। सार्क के काठमांडू सम्मेलन में 'ग्लोबल वार्मिंग' के कारण मौसम

का अप्रत्याशित मिजाज, प्राकृतिक आपदा प्रवंधन में अपेक्षाकृत कमजोर सरकारें, एक बड़े हिस्से में कष्टदायक गरीबी आदि तमाम विषयों पर विचार रखें गए हैं, परंतु दुर्भाग्य से सार्क के तमाम अच्छे कार्य पाकिस्तान के विदेश मामलों के सलाहकार सरताज अज़ीज़ और भारत के विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज के बीच हुई 20 मिनट की बातचीत में किये गये। इसीलिए सार्क को यदि और अधिक सफलता प्राप्त करनी है तो भारत और पाकिस्तान के रिश्तों में सुधार होना आवश्यक है क्योंकि यही दो देश इसके सबसे बड़े देश हैं।

अगर हम सार्क में भारत की भूमिका की बात करे तो इसमें कूटनीति ही नहीं, बल्कि व्यापार व आर्थिक क्षेत्र में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। 19वें सार्क शिखर सम्मेलन का भारत द्वारा बहिष्कार किये जाने पर अफ़ग़ानिस्तान, बांग्लादेश व भूटान के सहयोग के साथ श्रीलंका ने भी यहाँ तक कह दिया कि भारत के बिना इस सम्मेलन का कोई औचित्य ही नहीं है। यह भारत की भूमिका को दर्शाता है, यदि हम आर्थिक दृष्टि से देखें तो भारत सार्क में न सिर्फ क्षेत्रफल व जनसंख्या के लिहाज से 70% हिस्सेदारी रखता है बल्कि संगठन की अर्थव्यवस्था में भी उसकी हिस्सेदारी 70% से ज्यादा है। वर्तमान में भारत का अन्य सार्क देशों के साथ व्यापार 15 बिलियन डॉलर यानि 1002 अरब रुपए के बराबर है। इसमें से 12.5% बिलियन डॉलर का निर्यात और आयात महज 2.5 मिलयन डॉलर का है। यह दक्षिण एशियाई देशों की भारत पर निर्भरता को दर्शाता है। सार्क के सदस्यों में सबसे ज्यादा व्यापार भारत का बांग्लादेश, श्रीलंका व नेपाल के साथ होता है। नेपाल और भूटान का 50% से अधिक व्यापार भारत के साथ होता है। यदि हम आर्थिक एवं तकनीकी दृष्टि से देखें तो चाहे वह अफ़ग़ानिस्तान हो या बांग्लादेश, श्रीलंका, भूटान, मालदीप, नेपाल आर्थिक रूप से भारत सभी का सहयोग कर रहा है। यह भारत के सहयोग का उदाहरण है कि यह भूटान, मालदीव एवं अन्य देशों में ऊर्जा एवं अन्य परियोजनाओं पर काम कर रहा है इसके अलावा भी सार्क के देश इससे पर्यटन, शिक्षा निर्माण एवं उद्योग में और ज्यादा निवेश चाहता है। वही पर्यटन, होटल, एयरपोर्ट व मतस्य उद्योग में सहयोग बढ़ाना चाहता है। इसके अलावा भारत का श्रीलंका में निवेश 20 करोड़ डॉलर से बढ़कर 1 अरब डॉलर हो जाने की उम्मीद है। इसके साथ भारत का अफ़ग़ानिस्तान में आर्थिक गलियारे के विकास के साथ नेपाल में भी भारत की परियोजनाएँ चल रही हैं।

सार्क में भारत की भूमिका को यदि हम कूटनीति की दृष्टि से देखें तो सार्क के सभी देश किसी न किसी तरह से भारत के ही भू-भाग हैं। मौर्यकाल में भारत अफगानिस्तान से म्यांमार तक एक था। ऐसे में भारत सांस्कृतिक तौर पर इन देशों के लिए केंद्र के समान है। वर्तमान में सार्क के आठ सदस्यों में से चार (पाकिस्तान, नेपाल, भूटान और बांग्लादेश) भारत के साथ सीमा साझा करते हैं और सार्क के किसी भी देश की स्थिति ऐसी नहीं है, यही बात भारत को कूटनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बनती है।

परंतु वर्तमान में दक्षिण एशिया में चीन के बढ़ते हस्तक्षेप एवं सार्क के कुछ देशों का भारत को अस्थिर करने के इरादे से चीन को इस क्षेत्र में बढ़ावा दे रहा है, इससे भारत के समक्ष एक चुनौती उभर रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- *दीक्षित,जे. एन.(2012) भारतीय विदेश नीति (Indian Foreign Policy). दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.*
- *फड़िया बी. एल. (2012) अंतर्राष्ट्रीय राजनीति. आगरा: साहित्य भवन प्रकाशन.*
- *पंत पुष्पेश. जैन पाल. पचौला राखी. (2014-15) अंतर्राष्ट्रीय सम्बंध मेरठ: मीनाक्षी प्रकाशन.*
- *बाजपेयी अरुणोदय, (2012) समकालीन विश्व एवं भारत प्रमुख मुद्दे और चुनौतियां. दक्षिण एशिया में पियर्सन एजुकेशन (इण्डिया) डार्लिंग किंडरस्ले: प्रकाशन.*
- *कुमार विजय राय. अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय संस्थाए और प्रमुख व्यक्तित्व. दिल्ली: विवास पनोरमा प्रकाशन.*
- *खन्ना वी. एन. अंतर्राष्ट्रीय संबंध.(2003) नोएडा: विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि.*
- *पंत पुष्पेश. (2008) अंतर्राष्ट्रीय संगठन.नई दिल्ली: टाटा हिल्ल एजुकेशन प्राइवेट लिमिटेड.*
- *फड़िया बी. एल. राजनीति विज्ञान.आगरा: साहित्य भवन प्रकाशन (उ.प्र.)*
- *बाली सूर्यकान्त. भारत के राजनीति के महाप्रश्न.(2012) नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.*
- *सिकरी राजीव (2009) Challenge And Strategy.Dilhi: Sage Publication India Pvt Ltd*
- *छिब्बर भारती, 'भारत की विदेश नीति' वर्ल्ड फोकस मासिक जर्नल*
- *मिश्र, के. एस. पुरी, वी. के. (2010) 'भारतीय अर्थव्यवस्था' हिमालया पब्लिशिंग हाउस मुंबई*
- *'समकालीन विश्व राजनीति' (2007) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) प्रकाशित नई दिल्ली.*
- *के.पी.सक्सेना. 'दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग' इंस्टिटूसनल फ्रेमवर्क" विकास प्रकाशन नई दिल्ली*
- *आर. अरविन्द. सार्क वर्ल्ड फोकस मासिक पत्रिका वाल्यूम*
- *चन्द्र प्रकाश 'सार्क प्रोफाइल' ओ. पी. सी. आई .टी नई दिल्ली.*
- *फड़िया, बी. एल. राजनीति विज्ञान प्रतिगोगिता साहित्य सीरीज आगरा.*
- *भारत की विदेश नीति,वर्ल्ड फोकस विदेश मामलो पर भारत-केन्द्रीय मासिक जर्नल*
- *गुप्ता ओम (1989) भारत-पाकिस्तान संबंधो के पचास दिन. पब्लिक एशिया.*
- *भार्गव के. के.दक्षेस राष्ट्रो में पारस्परिक सहयोग की बड़ी जरूरत. राजस्थान पत्रिका.*
- *प्रसाद विमल. 'रीजलन कोआपरेशन इन साउथ एशिया'*

- *सिंह हरकिशोर. (1989) दक्षेस की दयनीयता संदेह शंका और अविश्वास का माहौल.दिल्ली प्रकाशन.*
- *नायक ए नियाज. "सार्क ने सहयोग के नए द्वारखोले है दिल्ली मोतीलाल पब्लिकेशन.*
- *सत्येंद्र, कुमार अनिल "अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय संस्थाए और प्रमुख व्यक्तित्व" दिल्ली-विवास मनोरमा प्रकाशन.*
- *पोलिटिकल साइंस(1986) रिव्यू*
- *अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में विदेश सचिवो का व्याख्यान*
- *तपन बिस्वाल. (2013) 'अंतर्राष्ट्रीय संबंध' Macmillan Publishers India Ltd. Haryana*
- *भारत और सार्क की संभावनाए जनसत्ता समाचार*
- *दैनिक जागरण, इंडिया टुडे, नव भारत टाइम्स*
- *सिंह जे.जे. (2013) एक सेनाध्यक्ष की आत्मकथा .*
- *सार्क सचिवालय की आधिकारिक वेबसाइट: http://www.saarc-sec.org/ सार्क शिखर सम्मेलन की घोषणाएं: http://www.saarc-sec.org/SAARC-Summit/7/*
- *http://www.bbc.com/hindi/news/011213_parliament_as.shtml*
- *http://www.hciolombo.org/*
- *http://mea.gov.in/Portal/ForeignRelation/Sri_Lanka_Jan_2015*
- *http://www.sandarbha.com/india-srilanka-relations-hindi/*
- *http://www.bbc.com/hindi/india/2015/06/150606_pm_bangladesh_visit_nr*
- *http://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/12515/9/09*
- *https://www.narendramodi.in/hi/engaging-with-neighbours-135838*
- *http://gshindi.com/category/india-world/bhaarata-baangalaadaesa-kae-baica-haua-paramaanau-samajhaautaa-apasai*
- *www.hci.gov.in/male*

- *https://www.facebook.com/indianMaldives*
- *https://khabar.ndtv.com/topic/*
- *http://gshindi.com/category/india-world/bhaarata-naepaala-sanbandha-1950-sae-2016-taka*
- *http://www.vivacepanorama.com/india-bhutan-relations/*
- *http://www.indiaspendhindi.com/cover-story*
- *http://www.vivacepanorama.com/south-asian-association-for-regional-cooperation/*
- *https://www.prabhatkhabar.com/news/117331-story.html*
- *Kumar arun, Black money in india, pengulne india,New Delhi-2002*
- *http://www.mea.gov.in/Speeches-Statements-hi.htm?dtl/20348/Foreign*
- *http://mea.gov.in/in-focus-article*
- *hi.htm?24315/India+and+SAARC+Interlinked+Dreams*
- *https://khabar.ndtv.com/news/world/most-number-of-poors-was-living-in-india-in-2013-says-world-bank-1469338*
- *http://www.bbc.com/hindi/regionalnews/story/2004/01/printable/040106_saarc_decla.shtml*
- *https://www.prabhatkhabar.com/news/117331-story.html*
- *eenews.india.com/hindi/news/business/india-wants-more-trade-cooperation-among-saarc-nations/202928*

- *https://tradingeconomics.com/bangladesh/gdp-growth*
- *https://tradingeconomics.com/pakistan/gdp-growth*
- *http://www.mea.gov.in/Speeches-Statements-hi.htm?dtl/20348/Foreign*
- *http://dfpd.nic.in/saarc-food-bank-hi.htm*
- *http://hindi.oneindia.com/news/2008/08/16/south-asian-conclave-kathmandu.html*
- *http://dfpd.nic.in/saarc-food-bank-hi.htm*
- *Economic and political weekly journal, February 28, 2009 pg no. 118*
- *Economic and political weekly journal, August 25, 2001*
- *Economic and political weekly journal March 17, 2001*

ज्ञान शांति मैत्री

परिशिष्ट

https://www.google.co.in/search?dcr=0&biw=1366&bih=662&tbm=isch&sa=1&ei

सार्क सचिवालय काठमाण्डू (नेपाल)

www.google.co.in/search?dcr=0&tbm=isch&q=saarc+summit+2002

सार्क का 11वाँ शिखर सम्मेलन काठमाण्डू (नेपाल)

https://www.google.co.in/search?dcr=0&biw=1366&bih=662&tbm=isch&sa=1&eisaarc+summit+2005

13वां सार्क शिखर सम्मेलन के दौरान प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह का सम्बोधन 12 नवम्बर 2005 ढाका (बांग्लादेश

https://www.google.co.in/search?dcr=0&tbm=isch&q=saarc+summit+2010

16वां सार्क शिखर सम्मेलन के दौरान सभी सार्क देशो के राष्ट्रो राष्ट्राध्यक्ष 2010 थिम्पू (भूटान)

https://www.google.co.in/search?dcr=0&biw=1366&bih=662&tbm=isch&sa

18वाँ शिखर सम्मेलन के दौरान भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ पाकिस्तान के प्रधानमंत्री के नवाज शरीफ

18वाँ सार्क शिखर सम्मेलन में भारत के प्रधान्मत्री के साथ बांग्लादेश के प्रधानमंत्री शेख हसीना 2014(नेपाल)

https://www.google.co.in/search?dcr=0&biw=1366&bih=662&tbm=isch&sa=1&ei=8pZHWs

भारत में स्थापित सार्क सेटेलाइट जीसैट-9 का निर्माण कार्य करते हुये भारतीय वैज्ञानिक

भारत में स्थापित सार्क सेटेलाइट जीसैट-9 का सफल परीक्षण (ISRO) 5 मई 2017

*भारत में स्थापित सार्क सेटेलाइट जीसैट-9 का सफल परीक्षण (**ISRO**) के बाद भारतीय प्रधानमंत्री का सम्बोधन*

https://www.google.co.in/search?dcr=0&biw=1366&bih=662&tbm=isch&sa=1&e

***https://upload.wikimedia.org/** सार्क विकास कोष (भूटान)*

ज्ञान शांति मैत्री